P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-5* January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में साझा सरकारः आवश्यकता, चुनौतियाँ व सम्भावनाएँ

प्रकाश चन्द मीना
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
राजगढ, अलवर, भारत

सारांश

भारतीय राजनीति लोकतांत्रिक मर्यादाओं के विभिन्न चरण संसदीय व्यवस्था में देखने को मिलते रहे हैं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एकदलीय, द्विदलीय तथा बहुदलीय गठबंधनों की सरकारें प्रयोग के रूप में तथा व्यवहारिक रूप में कार्य करती रही हैं भारत के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में राज्य स्तर पर तथा अखिल भारतीय स्तर पर मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के अनुपातिक रूप से जनप्रभाव के कारण ताल–मेल से चलने वाली सरकारों का एक लम्बा सिलसिला दिखाई देता है।

आरंभिक चरणों में विभिन्न राजनीतिक दलों के परस्पर गठबंधन के कुछ राजनीतिक मूल्य एवं उद्धेश्य दिखाई देते थे किन्तु धीरे–धीरे यह गठबंधन की राजनीति अवसरवादिता तथा मूल्यहीनता के स्तर तक पहुँच गई है भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में यह तो आवश्यक लगता है कि इसमें किसी एक राजनीतिक दल का राष्ट्रीय स्वरूप समूचे देश की जनाकांक्षाओं की पूर्ती करे, इसलिए प्रातीय स्तर पर छोटे–छोटे दलों की प्रासंगिकता क्षेत्रीय स्तर पर बढ़ी है किन्तु इनमें परस्पर प्रलोभन, समझौतावाद तथा अवसरवादिता का बोल–बोला बढ़ता दिखाई देता है

अतः यह कहा जा सकता है कि भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में गठबंधन की राजनीति एक बड़ी आवश्यकता भी है तो साथ में चुनौती भी है।

मुख्य शब्द : संसदीय शासन व्यवस्था, गठबंधन सरकार, संघात्मक शासन व्यवस्था, बहुदलीय व्यवस्था।

प्रस्तावना

वर्तमान 21 वीं सदी में बदलते परिदृश्य में भारतीय रानीतिक व्यवस्था में परिवर्तन देखा जा सकता है। लगभग एक दशक से केन्द्र राज्य संबंध का विषय देश की राजनीति को बहुत अधिक झकझोर रहा है। 1967 के चतुर्थ आम चुनाव में भारतीय रानीतिक परिदृश्य से कांग्रेस के एकाधिकार की समाप्ति तथा अनेक राज्यों में गठबंधन सरकार को राजनीति विज्ञान के अधवेत्ताओं में आश्चर्य मिश्रित यथार्थ के रूप में देखा है।

1990 के आम चुनाव के पश्चात् गठबंधन सरकार भारतीय राजनीति की वास्तविकता हो गई है। केन्द्र तथा अनेक राज्य सरकारों में गठन सरकारों का निर्माण हुआ। बहुदलीय व्यवस्था के कारण त्रिशंकु संसद के गठन के साथ ही गठबंधन सरकार का प्रत्येक केन्द्र में सत्र प्रारंभ हुआ। अपने प्रारंभिक वर्षों में गठबंधन सरकारों का अनुभव सुखद नहीं रहा है, 1967 के पश्चात् जिन साझाकारों का गठन हुआ वे न तो जनइच्छाओं की पूर्ती में सफल हो सके और न ही स्थायी सिद्ध हो सकी है।

1977 में केन्द्र में सत्तारूढ़ जनता सरकार अपने 2/3 बहुमत के बावजूद भी असमय ही कालकलित हो गई। ऐसा प्रतीत होने लगा कि गठबंधन का प्रयोग भारत में असफल रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारत के राजनीतिक सिद्धान्त के वर्तमान परिदृश्य का अध्ययन एवं विवेचन।
2. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रमुख राजनीतिक दल के रूप में कांग्रेस के जनमत का तुलनात्मक अध्ययन।
3. 20 वीं सदी के अंतिम दशकों तथा 21 वीं सदी के आंरभिक वर्षों में भारतीय जनता पार्टी तथा अन्य क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की स्थिति एवं विकास का मूल्यांकन।

पुनः कॉंग्रेस का प्रभुत्व 1980 तथा 1984 में देखने को मिला। 1996 के निर्वाचन में सर्वाधिक जनादेश प्राप्त हुआ। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में बनी गठबंधन सरकार सर्वाधिक अल्पकालीन केवल 13 दिनकी सरकार थी। तरहवीं लोकसभा में निर्वाचन पूर्ण गठित एन. डी.ए. को बहुमत प्राप्त हुआ यह भी गठबंधन का एक स्वरूप ही है। लेकिन 14वीं और 15वीं लोकसभा के आम चुनाव में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ है इसके साथ 16वीं लोकसभा चुनाव में एन.डी.ए. को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ, श्री नरेंद्र कुमार मोदी को प्रधानमंत्री बनाया, यह सरकार सफलतापूर्वक आज भी कार्यरत है।गठबंधन सरकार की वास्तविकता तथा उसके मार्ग में आने वाली कठिनाईयों का निराकरण करना आवश्यक है। इस गठबंधन की राजनीति ने भारतीय संघवाद को तथा केन्द्र–राज्य संबंधों को अत्यधिक प्रभावित किया है। प्रस्तुत आलेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि आज भारतीय राजनीति में अवसरवादिता, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण की प्रवृति विकसित हो चुकी है।

वर्तमान राजनीति में अवसरवादिता तथा मूल्यविहीन राजनीति के दौर तथा उसका व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव को भी समय के अनुसार देखने की प्रवृति विकसित करनी होगी। भारत में साझा सरकारें क्षेत्रीय दलों के प्रभाव से मुक्त नही हैं। आज क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं। भारतीय राजनीति में कॉंग्रेस के प्रभाव में कमी व राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी दलों के पतन के कारण भारत की राजनीति में साझा सरकार का उदय किया है।

तथा इससे छुटकारा पाने के लिए आवश्यक है कि दल–बदल कानून में परिवर्तन किया जाए। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि भारत की संसदीय व्यवस्था में महत्वपूर्ण सुधारों की आवश्यकता है। इनमें भी निर्वाचन व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता प्राथमिक है जिससे राजनीतिक दलों की अवसरवादी नीतियों को नियंत्रित किया जा सके। भारत में राष्ट्रीय दलों द्वारा अपने प्रभाव में वृद्धि के लिए गम्भीर प्रयास किए जाने की आवश्यकता है जिससे क्षेत्रीय दलों के प्रभाव से मुक्त होकर सौदेबाजी की बाध्यकारिता को नियंत्रित किया जा सके और इस प्रकार साझा सरकारों के भविष्य को सुदृढ़ बनाया जा सके।

साझा सरकारों की उत्पत्ति के प्रेरक तत्व

भारतीय राजनीति में स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान या स्वतंत्रता प्राप्ति तक सत्ता प्राप्ति की लालसा राजनीतिक सक्रियता का एक मात्र प्रेरक तत्व नही था किन्तु जैसे ही देश हित की सर्वोपरिता हटी तथा निहित स्वार्थों का जन्म हुआ। सत्ता की राजनीति का प्रचलन हो गया। यद्यपि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सत्ता का लगाव नेहरू व पटेल के व्यक्तित्व में भी दिकदर्शित होता है तथापि वह एक आवरण की छाया में दृष्यमान हो रहा था किन्तु 1967 के बाद तो सत्ता एक राजनीतिक खेल बन गयी जिसमें राजनीतिज्ञ खिलाड़ी होते हैं। वास्तविकता इस तथ्य में है कि आज राजनीतिज्ञ प्रशासक किसी भी तरीके से सत्ता की प्राप्ति अपने निहित स्वार्थों हेतु करते हैं, देशहित, समाजहित उनके लिए गौण हो गया है।

भारत में साझा सरकारों की राजनीति के उत्तरदायी कारकों का स्रोत वस्तुतः इस मूलभूत प्रवृति में खोजा सकता है।

1. शक्ति या सत्ताः– शक्ति या सत्ता एक प्रलोभन है, जिससे राजनीति अछूति नही रह सकती है। सत्ता ही एकमात्र आधार है जिसके कारण विपक्ष भी सरकार में आना चाहता है तथा वह प्रारंभ से ही इस प्रकार की भावना से प्रेरित रहता है। वर्तमान समय में भी विशेषकर 1967 के बाद अनेक राजनीतिक दल सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्षरत रहे। इस स्थिति से भारत की राजनीति में छोटे–छोटे दलों व क्षेत्रीय गटों को आगे आने में सहायता मिली है।
2. आर्थिक तत्वः– भारतीय राजनीति के धनबल ने भी अत्यधिक प्रभावति किया है। अधिकांश भारतीय लोग आज भी आर्थिक पिछड़ेपन से ग्रसित है व्यवस्थापिका में विधायकों द्वारा अनेक बार राजनीतिक प्रतिबद्धता को त्यागकर व अपनी निष्ठाओं को छोड़कर धन प्राप्ति की ओर अग्रसर होना इसी संदर्भ को इंगित करता है।
3. जातियताः– भारत के अधिकांश राज्यों में जातिगत असंतुलन राज्यों की स्थिति को प्रभावित करता है तथा मंत्रिमण्ड़ल की संरचना में असंतुलन उत्पन्न करता है। यह कहा जा सकता है कि जाति व्यवस्था साझा सरकारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज हरियाणा जैसे राज्यों में राजनीतिक टिकटों को बँटवारा जातिगत आधार पर किया जाता है।

निष्कर्ष

1. वर्तमान भारतीय राजनीति में प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय दलों में परस्पर गठबंधन उनकी बड़ी आवश्यकता बन गया।
2. वर्तमान राजनीतिक सत्ता के लालच में अनेक विपरित विचारधाराओं के मध्य अवसरवादी गठबंधन देखने को मिल रहे हैं जिससे राजनैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है।
3. भावी राजनीति में गठबंधन के अवसरों को जनमत के दृष्टिकोण में नकारना आरंभ कर दिया है जिससे राजनीतिक दल राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप अपने एजेंड़े प्रस्तुत करने लगे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *ए.पी.अवस्थी '' भारतीय राज व्यवस्था लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा 2001*
2. *बी.सी. दास, पॉलिटिकल डवलपमेंट दन इण्डिया, आशीष प्रेस, नई दिल्ली*
3. *बी.पी. सिंह, शासन एवं राजनीति, ज्ञानदा प्रकाशन नई दिल्ली 2002*
4. *विपिन चन्द्र''भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 1996*
5. *प्रो. इकबाल नारायण, स्टेट पॉलिटिक्स इन इण्डिया, प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस 1968*
6. *जय नारायण पाण्डे, '' भारत का संविधान सेंटर लॉ ऐजेंसी इलाहबाद 2002*
7. *बी. एल. फड़िया, ''भारतीय शासन और राजनीति साहित्य प्रकाशन, आगरा 2019।*
8. *प्रो. पी. डी. शर्मा, '' भारतीय शासन और राजनीति कॉलेज बुक हाउस जयपुर।*